

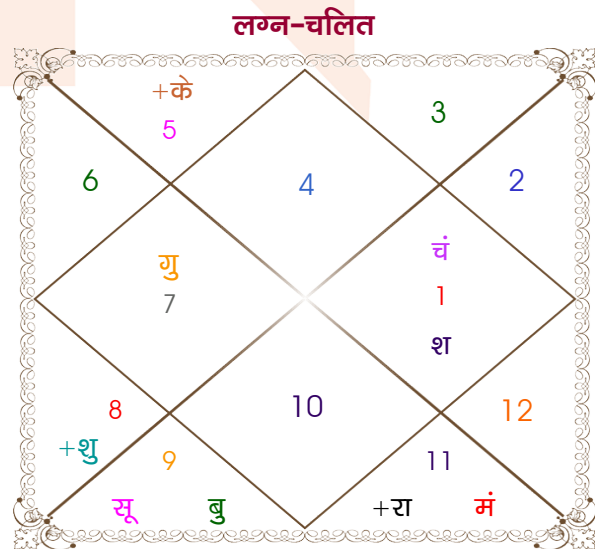
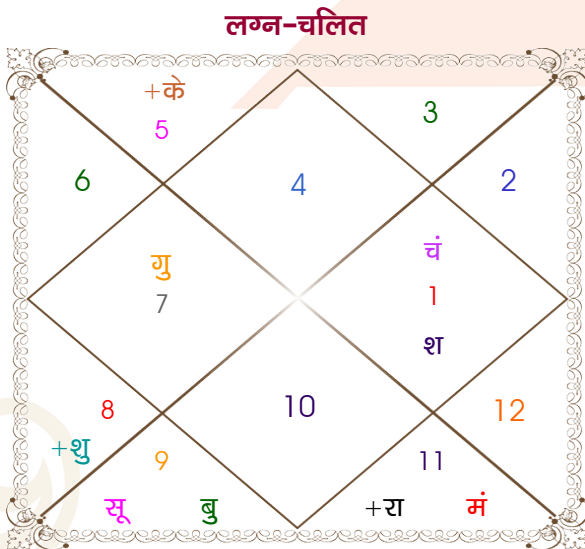


Model: Web-FreeMatching

Order No: 121330203

स्त्रीलिंग : _____ लिंग _____ स्त्रीलिंग
 19/12/1969 : _____ जन्म तिथि _____ 19/12/1969
 शुक्रवार : _____ दिन _____ शुक्रवार
 घंटे 20:30:00 : _____ जन्म समय _____ 20:30:00 घंटे
 घटी 33:29:37 : _____ जन्म समय(घटी) _____ 33:29:37 घटी
 India : _____ देश _____ India
 Mumbai : _____ स्थान _____ Mumbai
 18:58:00 उत्तर : _____ अक्षांश _____ 18:58:00 उत्तर
 72:50:00 पूर्व : _____ रेखांश _____ 72:50:00 पूर्व
 82:30:00 पूर्व : _____ मध्य रेखांश _____ 82:30:00 पूर्व
 घंटे -00:38:40 : _____ स्थानिक संस्कार _____ -00:38:40 घंटे
 घंटे 00:00:00 : _____ ग्रीष्म संस्कार _____ 00:00:00 घंटे
 07:06:09 : _____ सूर्योदय _____ 07:06:09
 18:05:16 : _____ सूर्यास्त _____ 18:05:16
 23:26:19 : _____ चित्रपक्षीय अयनांश _____ 23:26:19

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 13वर्ष 9मा 27दि		07:23:23	कर्क	लग्न	कर्क	07:23:23	शुक्र 13वर्ष 9मा 27दि	
गुरु		04:06:46	धनु	सूर्य	धनु	04:06:46	गुरु	
16/10/2024		17:27:01	मेष	चंद्र	मेष	17:27:01	16/10/2024	
16/10/2040		09:33:53	कुंभ	मंगल	कुंभ	09:33:53	16/10/2040	
गुरु	04/12/2026	21:40:43	धनु	बुध	धनु	21:40:43	गुरु	04/12/2026
शनि	17/06/2029	07:02:37	तुला	गुरु	तुला	07:02:37	शनि	17/06/2029
बुध	22/09/2031	25:26:41	वृश्चि	शुक्र	वृश्चि	25:26:41	बुध	22/09/2031
केतु	28/08/2032	08:49:51	मेष व	शनि व	मेष	08:49:51	केतु	28/08/2032
शुक्र	29/04/2035	22:10:16	कुंभ व	राहु व	कुंभ	22:10:16	शुक्र	29/04/2035
सूर्य	16/02/2036	22:10:16	सिंह व	केतु व	सिंह	22:10:16	सूर्य	16/02/2036
चन्द्र	17/06/2037	15:04:02	कन्या	हर्ष	कन्या	15:04:02	चन्द्र	17/06/2037
मंगल	23/05/2038	06:02:47	वृश्चि	नेप	वृश्चि	06:02:47	मंगल	23/05/2038
राहु	16/10/2040	03:55:17	कन्या	प्लूटो	कन्या	03:55:17	राहु	16/10/2040



अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	गज	गज	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	मेष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

Ms. का वर्ग मृग है तथा Ms. का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Ms. और Ms. का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Ms. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

**अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते ।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते ।।**

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है। क्योंकि मंगल Ms. कि कुण्डली में अष्टम् भाव में कुम्भ राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा ।
न मंगली मंगल राहु योग ।**

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु Ms. कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Ms. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

**अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते ।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते ।।**



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Ms. कि कुण्डली में अष्टम् भाव में कुम्भ राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा । न मंगली मंगल राहु योग ।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु Ms. कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते ।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत् । तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत् ।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु Ms. कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत् । तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत् ।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु Ms. कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Ms. तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।